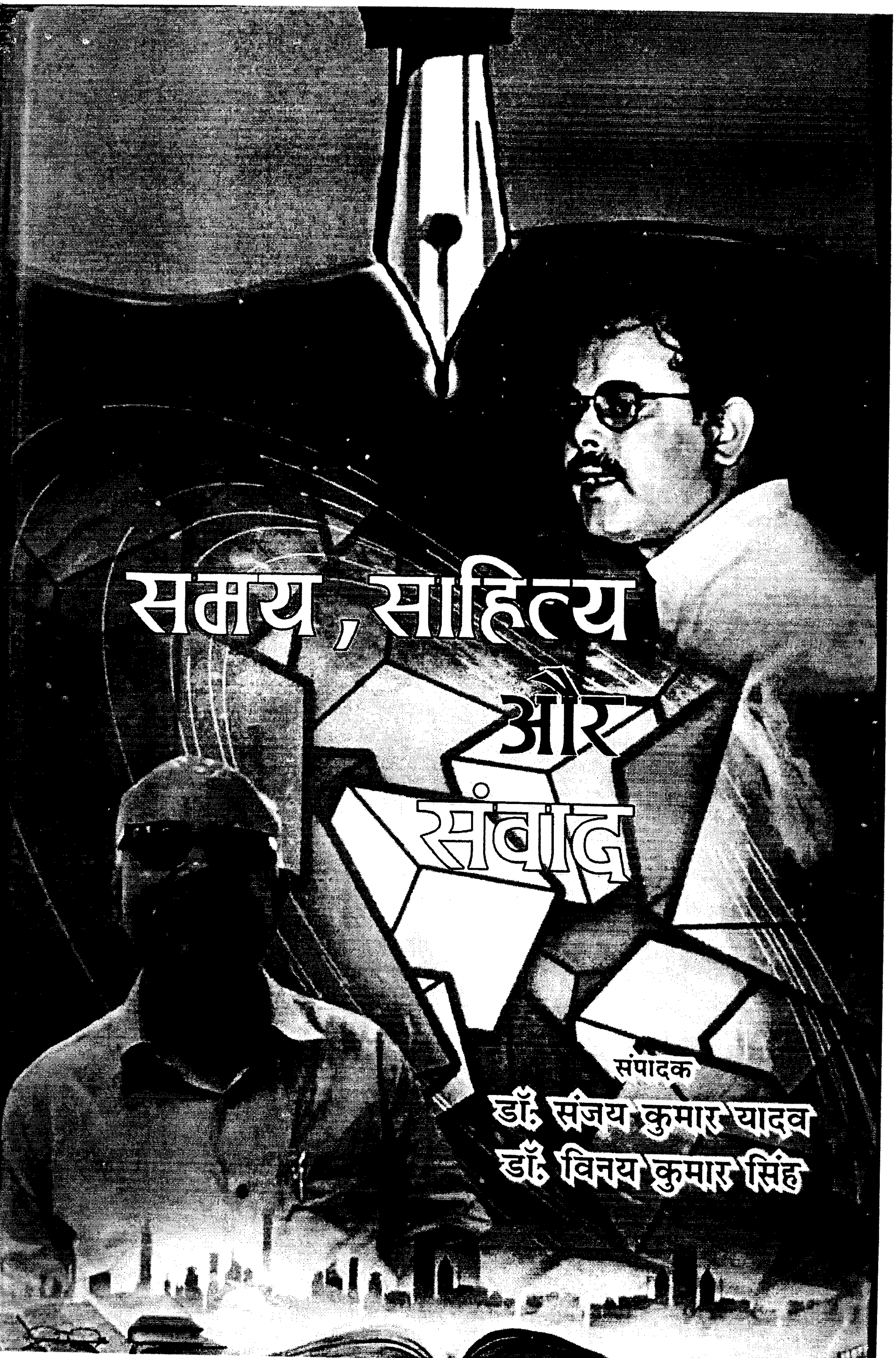

समय, साहित्य और संवाद

संपादक
डॉ. संजय कुमार यादव
डॉ. विनय कुमार सिंह

समय, साहित्य और संवाद

संपादक
डॉ. संजय कुमार यादव
डॉ. विनय कुमार सिंह

अभिधा प्रकाशन

परामर्शक-मंडल
प्रो. कल्याण कुमार झा, डॉ. राकेश रंजन, डॉ. सुनील कुमार

संपादक-मंडल
डॉ. हेमा कुमारी, डॉ. भोला प्रसाद यादव, डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन', अतुल आजाद

ISBN : 978-93-92342-46-2

प्रथम संस्करण
2022

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

प्रकाशक
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002
दिल्ली कार्यालय
जी72, गंगा विहार, गोकुलपुरी, दिल्ली-110094

अक्षर-संयोजन
एस. कुमार

आवरण
हिमांशु राज

मुद्रक
बी० के० ऑफसेट, दिल्ली-32

मूल्य
1100/- (ग्यारह सौ रुपये)

Samay, Sahitya aur Samwad
Edited By **Dr. Sanjay Kumar Yadav & Dr. Vinay Kumar Singh**
Rs. 1100.00

अनुक्रम

संपादकीय

शब्द-सारथी की अक्षर-यात्रा/ डॉ. संजय कुमार यादव एवं डॉ. विनय कुमार सिंह/9

संस्मरण

1. श्रम, पुरुषार्थ और प्रतिभा का प्रतिमान : सतीश कुमार राय/ डॉ. परमेश्वर भक्त/13
2. 'पर-उपकार वचन मन काया' के विग्रह : डॉ. सतीश कुमार राय/ डॉ. जंगबहादुर पांडेय 'तारेश'/17
3. डॉ. सतीश कुमार राय का लेखकीय व संपादकीय व्यक्तित्व/ साकेत बिहारी शर्मा 'मंत्र मुदित'/28
4. साहित्य-सागर का अनमोल मोती/डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना/34
5. प्रतिमानों के प्रतिमान डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/चतुर्भुज मिश्र/38
6. संवाद का सहज संवेदन और संवेदन का सार्थक सृजन/डॉ. संजय पंकज/42
7. चंपारन का गौरव बढ़ानेवाले विद्वान डॉ. सतीश कुमार राय/ अंजनी कुमार सिन्हा/48
8. वो देखो! रौशन हुआ जाता है रस्ता.../डॉ. रामेश्वर द्विवेदी/51
9. अनजान को जितना मैंने जाना है/प्रो. (डॉ.) सुरेंद्र प्रसाद केसरी/61
10. चंपारन के रत्न : डॉ. सतीश कुमार राय/प्रो. (डॉ.) पुष्पा गुप्ता/64
11. डॉ. सतीश कुमार राय : एक सहज व्यक्तित्व/प्रो. (डॉ.) संत साह/69
12. प्रो. सतीश कुमार राय : सहज व्यक्तित्व के पुरुषार्थी/प्रो. राजीव कुमार झा/72
13. मेरी राय में प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. श्रीकांत सिंह/75
14. एक चुंबकीय व्यक्तित्व/डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी/78
15. डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान' से नामचीन तक/डॉ. मृगेंद्र कुमार/81
16. अनजान से अभिज्ञान तक/डॉ. तारकेश्वर उपाध्याय/88
17. मेरे लिए सतीश के होने का मतलब/डॉ. अनिल कुमार राय/92
18. उपलब्धियों के शिखर-पुरुष डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. शैल कुमारी वर्मा/95
19. शीतल झरने के मीठे पानी जैसा व्यक्तित्व : प्रो. सतीश कुमार राय जी!/ डॉ. शकील मोईन/98
20. गुफ्तगू में ही झलकती विद्वत्ता/जफर इमाम/100
21. भाई सतीश : एक दृष्टि/लालबाबू शर्मा/103

22. विरल व्यक्तित्व के धनी डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/
डॉ. रामनरेश पंडित रमण/105
23. नमामि वीथिनायकम्!/डॉ. उपेंद्र प्रसाद/108
24. सतीश : मेरा मित्र/मनोज मोहन/113
25. हर दिल अजीज : प्रोफेसर सतीश कुमार राय/डॉ. राजीव कुमार/116
26. सहज और निश्छल साथी : सतीश कुमार राय/अशोक गुप्त/120
27. सहज, सरल और आत्मीय बंधु प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
अरविंद कुमार/124
28. जीवेत शरद: शतम्/डॉ. मधु रचना/131
29. कर्मठता और मेधा के प्रतिमान भाई 'अनजान'/डॉ. नागेंद्र सिंह/134
30. भैया, साइकिल चलाना सीख लीजिए न/डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी/137
31. प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय 'अनजान' से जुड़े संस्मरण/सुरेश गुप्त/149
32. संघर्ष की प्रतिमूर्ति/अरुण गोपाल/163
33. डॉ. सतीश कुमार राय : एक साहित्यिक गौरव-पुरुष/डॉ. दिवाकर राय/165
34. प्रखर व्यक्तित्व, समर्पित शख्सियत डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. सीमा स्वधा/181
35. प्रोफेसर राय को जैसा मैंने जाना/डॉ. अनिता सिंह/185
36. डॉ. सतीश कुमार राय : मेरी नजरों में/डॉ. विजयिनी/187
37. अभिनव अनजान/डॉ. जगमोहन कुमार/189
38. मेरे प्रेरक, मेरे सर्जक : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. हेमा कुमारी/193
39. अनमोल स्मृतियाँ/डॉ. चंद्रलता कुमारी/201
40. गुरुवर : एक परिचय/डॉ. राकेश कुमार/205
41. सहज व्यक्तित्व और प्रखर कर्तृत्व के प्रतिमान/डॉ. कुमार अनुभव/208
42. मेरे गुरुदेव डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. राकेश रंजन/212
43. सर के सान्निध्य में : एक संस्मरण/डॉ. हर्षलता सिंह/217
44. हिंदी के बहुआयामी साधक सतीश राय 'अनजान'/डॉ. संदीप कुमार सिंह/220
45. शोध की अभिलाषा से गुरुदेव मिले/डॉ. संजय कुमार सिंह/222
46. गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय के चरणों में समर्पित संस्मरण के दो शब्द/
डॉ. विजय कुमार पांडेय/225
47. अतीत के पन्नों में मेरे गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. रश्मि कुमारी/228
48. मेरे जीवन-पथ का पाथेय/डॉ. प्रकाश कुमार/232
49. समन्वय और सामंजस्य के अद्‌भुत कलाकार डॉ. सतीश कुमार राय/
डॉ. प्रीति मणि/237
50. हिंदी के विशाल छायादार वृक्ष प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. यशवंत कुमार/241

51. मेरे गुरु प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. प्रवेश कुमार पासवान/245
52. हिंदी साहित्य के नवल स्तंभ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
डॉ. राजेश कुमार चंदेल/247
53. आकाशधर्मा गुरु/डॉ. जितेंद्र कुमार/250
54. आकाशधर्मा गुरुवर सतीश कुमार राय/डॉ. भोला प्रसाद यादव/253
55. सहजता, सरलता और सहृदयता के छतनार वटवृक्ष : श्रद्धेय गुरुवर/
डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'/261
56. शोध-मर्मज्ञ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/डॉ. चंद्रभान राम/265
57. अभिनंदन-अभिनंदन/कुमारी रोशनी विश्वकर्मा/269
58. कवि सतीश कुमार राय को जितना मैं जानता हूँ/अविनाश कुमार पांडेय/272
59. सहज व्यक्तित्व : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. गुंजन श्रीवास्तव/276
60. ज्ञान के सागर/डॉ. पूजा/279
61. आँखों देखा सुख/अतुल आजाद/281
62. प्रेरक व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा-निवेदन/रश्मि शर्मा/286
63. मेरे प्रेरक और दिशा-निर्देशक/शारदा सिन्हा/288
64. गुरु-कृपा और मैं/पिंकी कुमारी/290
65. दिशाबोध करानेवाले प्रेरक आचार्य सतीश कुमार राय/सुजाता कुमारी/292
66. आचार्यत्व को धन्य करनेवाले गुरु/गीतांजलि कुमारी/296
67. आदरणीय गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/रेशमी कुमारी/299
68. मेरे अर्द्धनारीश्वर : मेरी दृष्टि में/प्रभा राय/302
69. मेरे पिता : जैसा मैंने जाना/डॉ. प्रज्ञा सुरभि/305
70. डॉ. सतीश कुमार राय : एक व्यक्तित्व के अनेक आयाम/समीक्षा सुरभि/309
71. 'अनजान' से अध्यक्ष तक/प्रो. त्रिविक्रम नारायण सिंह/318
72. सिद्ध आचार्य की षष्टिपूर्ति/प्रो. कल्याण कुमार झा/333
73. सारस्वत साधना के सिद्ध साधक : सतीश कुमार राय/डॉ. वीरेंद्रनाथ मिश्र/346
74. देखा न कोहकन कोई फ़रहाद के बग़ैर/डॉ. राकेश रंजन/350
75. ओहदेदार होने से अधिक आदमी होने की कला/डॉ. उज्ज्वल आलोक/361
76. शिक्षक, अध्यापक एवं गुरु के रूप में प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
डॉ. सुशांत कुमार/367
77. 'हिंदी विभाग एक परिवार है'/डॉ. संध्या पांडेय/372
78. 'अपनी मिट्टी का ऋण अब तक नहीं उतार पाया हूँ!'/डॉ. पुष्पेंद्र कुमार/374
79. कुशल प्रशासक डॉ. सतीश कुमार राय/मनोज कुमार/384
80. प्रेरणादायक गुरु डॉ. सतीश कुमार राय/अमित कुमार कर्ण/386

मूल्यांकन

81. 'अब नहीं मैं गीत गाने जा रहा हूँ' : डॉ. सतीश कुमार राय : एक समग्र मूल्यांकन/
प्रो. (डॉ.) अरुण कुमार/389
82. सतीश कुमार राय 'अनजान' का कवित्व : एक टिप्पणी/प्रो. रवींद्र उपाध्याय/412
83. उपेक्षित जनपदीय रचनाशीलता के प्रतिबद्ध संकलक-उद्धारक व्यक्तित्व/
प्रो. रमेश ऋतंभर/415
84. चंपारन और प्रो. राय : कहियत भिन्न न भिन्न/डॉ. विनय कुमार सिंह/418
85. डॉ. सतीश कुमार राय की संपादन-दृष्टि/डॉ. सुनील कुमार/425
86. डॉ. सतीश कुमार राय की शोध एवं आलोचना-दृष्टि/डॉ. पवन कुमार/448
87. 'दर्द सहने की तो आदत बहुत पुरानी है'/डॉ. पंकज कर्ण/467
88. शोध का प्रतिमान : एकांकीकार भुवनेश्वर का यथार्थबोध/डॉ. अनिता कुमारी/471
89. कवि, शायर डॉ. सतीश कुमार राय/राहुल कुमार/475
90. प्रखर शोध-दृष्टि का प्रतिमान : पत्रकार प्रेमचंद/सपना कुमारी/479
91. डॉ. सतीश कुमार राय की आलोचना-दृष्टि/रितु प्रिया/488
92. समृद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक परंपराओं का आईना/दिलीप कुमार/497
93. गोपाल सिंह 'नेपाली' : एक मूल्यांकन/सोनम कुमारी/501
94. डॉ. सतीश कुमार राय की दृष्टि में 'नेपाली'/प्रशांत प्रसाद/505

साक्षात्कार

95. डॉ. सतीश कुमार राय से एक अंतरंग बातचीत/ डॉ. माधव कुमार/514
96. 'अध्यापन मेरे लिए पेशा ही नहीं, धर्म भी है।'/
डॉ. सतीश कुमार राय से डॉ. अनु की बातचीत/537

कविता

97. साहित्यकार श्री सतीश कुमार राय की साठवीं वर्षगाँठ पर/व्रतराज 'विकल'/542
98. हे ज्ञानवान!/डॉ. विनय कुमार सिंह/545
99. सतीश राय होने का मतलब/डॉ. सतीश कुमार 'साथी'/546
100. गुरुवर की अंतस्-गरिमा/अंजनी अपूर्वा/548
101. डॉ. सोनी की दो कविताएँ/549
102. वीणा द्विवेदी की दो कविताएँ/552
103. अक्षर-देह रजनीगंधा है/डॉ. संजय कुमार यादव/563

जीवन-वृत्त/577
चित्र-वीथिका/593

'अनजान' से अध्यक्ष तक

–प्रो. त्रिविक्रम नारायण सिंह

कहना-सुनना जितना आसान नहीं है लिखना। लिखना अपेक्षाकृत कठिन कार्य है। व्यक्ति-विशेष के संबंध में लिखना तो और दुष्कर कार्य है क्योंकि उनके विषय में अनेक लोग बहुत जानते होते हैं। इसलिए उन पर अलग तरीके से कुछ नया लिखना मैराथन प्रतियोगिता से कम प्रतीत नहीं होता। लिखने-न-लिखने की द्विविधा को पार करते हुए कुछ लिखने का निर्णय विवेक के स्तर पर लिया। द्विविधा इस तर्क से अधिक निर्देशित हो रही थी कि जिसके संबंध में अधिक जानकारियाँ हैं, उनमें से उल्लेखनीय बिंदुओं को अलगाना कठिन लग रहा था। लंबे समय से साथ पढ़ते, रहते, रचते, अध्ययन-अध्यापन करते, प्रकाशन करते-कराते, देखते-सुनते, जानते-जनाते, समझते-समझाते, विचार-विमर्श करते, बैठकें और मंच साझा करते जिनके साथ हर प्रकार का सघन संबंध रहा, उन पर क्रमिक कोशिश के साथ इस सतर्कता से लिखना कि कुछ अनर्गल, अतिरिक्त, असत्य, अव्यावहारिक, असंगत या अप्रिय न हो जाए–अपने प्राचार्य पद-संबंधी दायित्वों की गुरुतरता और कतिपय निजी जीवन की व्यस्तताओं के बीच असहज प्रतीत हो रहा था। साथ ही यह खयाल भी बाधा खड़ी करता था कि 'चेतना के इस उज्ज्वल वरदान' को प्रकृति ने जिस खास तरह से गढ़ा है–उस गठनवाले शिल्प की जितनी बहुविध भंगिमाएँ हैं–उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण छूट न जाए। इस बोध के साथ कि प्रत्येक लेखक और व्यक्ति की अपनी खूबियाँ और सीमाएँ होती हैं, शब्द-कर्म में निरत हूँ।

सुघड़ शिल्प और उदात्त बिंब में ढले ऐसे चेतना-संपन्न व्यक्तित्व को हम प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय के नाम से जानते-पहचानते हैं। 'अनजान' इनका काव्यात्मक उपनाम है। 'अनजान' सतीश जी के संबंध में अज्ञानता और अभिज्ञता का, अथक ग्राह्यता और नूतनता का बोधक नहीं है, बल्कि ससीम को असीम, छोर को अछोर तक विस्तार देनेवाला परिज्ञान है। इस 'अनजान' का अभिज्ञान अनुशीलन और अनुसंधान है, अभिव्यक्ति

का अभिप्राय है, अद्यतन अनुभव है, चिंतन और प्रक्रम का नूतन प्रलंब है। इस 'अनजान' का अर्थ हिंदी भाषा और साहित्य का अनुशासन है, उनकी चिंतन-धाराओं और ज्ञानानुशासनों का अभिज्ञान है। बहुश्रुतता यहाँ 'अनजान' की व्यंजकता है। परिष्कार की अनवरत चेतना है, जो नई पीढ़ी की परिष्कृति के अभिधान में निरंतर फलित है।

अक्षर और वाणी की अधिष्ठात्री 'सरस्वती' और वैभव और ऐश्वर्य की स्वामिनी 'लक्ष्मी' के वरदान से अभिसिंचित ऋषि-मुनि की साधनाशील तपः और पुण्यभूमि बिहार प्रदेश के अरण्य परिक्षेत्र के बेतिया (पश्चिमी चंपारन जनपद) के योगापट्टी अंचलांतर्गत सिसवा भूमिहार गाँव के एक अत्यंत समृद्ध भूमिहार ब्राह्मण परिवार में 27 मई, 1962 ई. के रम्य और पावन दिवस को जन्मे स्वर्ण-मन और दीप-तन वाले कुलीन बालक को सतीश कुमार राय की संज्ञा प्राप्त है। भगवान शिव की बहुविध भास्वरता चेतना-शक्ति के रूप में सतीश में संचयित है। शंकर की अपरिमित शक्तियाँ अनेक रूपों में सतीश जी में सक्रिय हैं। इसलिए सतीश जी विद्यार्थी, पुत्र, भाई, पति, पिता, मित्र, अध्यापक, अन्वेषक, अध्यक्ष, आयोजक, आलोचक, लेखक, पत्रकार, संपादक, परीक्षक, समन्वयक, निदेशक, कुलानुशासक, प्रशासक (अध्यक्ष–छात्र कल्याण), परीक्षा-नियंत्रक, सदस्य अभिषद, अधिसभा, परीक्षा-बोर्ड, एकेडमिक कौंसिल, केंद्राधीक्षक, वीक्षक आदि सभी रूपों में महज कहने-भर के लिए नहीं रहे हैं, बल्कि होने की तरह, प्रतिमान-स्वरूप रहे हैं। इनके उल्लेखनीय व्यक्तित्व का मैं साक्षी रहा हूँ। इनकी सफलता का रहस्य यह है कि इनकी चेतना प्रबल और प्रखर तो है ही, इनका प्रयत्न भी सम्यक् और समर्पणयुक्त होता रहा है। साथ ही एक सच यह भी है कि आभिजात्य कुल में उत्पन्न होने के गुणात्मक और रक्षणीय जीवन-मूल्यों को इन्होंने सँजोया है और बहकने-बिखरनेवाले दुर्गुणों को फटकारकर रखा है।

सतीश जी के पिता स्मृतिशेष दामोदर प्रसाद राय अच्छे जमींदार थे। वैभव संपन्न बौद्धिक थे। अध्ययनशील प्रकृति के संवेदनशील प्राणी थे। अपने समय की प्रत्येक धड़कन और हलचल से अभिज्ञ रहते थे। जिस जमाने में स्नातक करना प्रशंसा का विषय हुआ करता था, उन्होंने (उत्तर बुनियादी) बी.ए. पास किया था। वे पुरुषार्थी, पराक्रमी पुरुष और प्रबुद्ध नागरिक थे। उनका व्यक्तित्व उन्नत, उदात्त, आभामय और प्रभावशाली था।

उनकी सामाजिकता, राजनीतिक-दृष्टि और वाग्मिता-शक्ति से लोग काफी प्रभावित थे। वे मनुष्यता के मूल्यों को साधे हुए मनुष्य थे। उनमें तेज, दर्प और विवेक तीनों था। उन्होंने स्वाधीन भारत की वास्तविकता को सूक्ष्मता से परखा था और अपनी समझ को विवेक-सम्मत बनाया था। वे संवेदना के धनी कवि थे। उनकी अनेक कविताएँ उस समय की प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं। सतीश जी ने उनकी बिखरी हुई कविताओं को सहेजकर-संपादित कर 31 कविताओं का संकलन 'छूटी हुई पगडंडियाँ' नाम से प्रकाशित कराया है। पिता के सम्मान और हिंदी के हक के लिए किया गया यह रचनात्मक प्रयास सराहनीय है। संपादकीय में सतीश जी ने अपने पिता की बौद्धिक-साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षमता तथा प्रभावशाली वक्तृत्व-कला का ईमानदारी से उल्लेख किया है। इस कविता-पुस्तक में कवि की 1945 से 1960 तक रचित रचनाओं में से प्रमुख रचनाएँ संकलित की गई हैं। दामोदर प्रसाद राय का काव्यात्मक उपनाम 'अनभिज्ञ' है। लेकिन इनकी कविताएँ युग-चेतना से झंकृत और भारत के राष्ट्रीय पुरुषों के गौरवमय व्यक्तित्व और कर्तृत्व से मंडित हैं। 'अनभिज्ञ' बनकर सहृदयों को श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों से अभिज्ञ करानेवाला रचनाकार अक्सर 'मैं' को मिटाने की साधना करता है।

सतीश जी चार भाइयों में सबसे छोटे हैं। चूँकि प्रकृति की प्रत्येक निर्मिति भिन्न है। इस सिद्धांत से उनके भाइयों के व्यक्तित्व में पृथक्ता-बोध स्वाभाविक ही है। अपने माता-पिता से भी चारों भाइयों को विरासत में व्यक्तित्व की बानगी और वंशानुगत गुण अलग-अलग प्राप्त हुए हैं। कद-काठी और काया में तो सभी पिता के समान लंबे-तगड़े, भरे-पूरे, गोरे-चिट्टे, उन्मत्त-उदात्त, पुरुषार्थ-संपन्न हैं, मगर उनकी प्रकृति में काफी भिन्नता है, क्योंकि पिता का बीज-तत्त्व वैशिष्ट्य रूप में सबमें अलग-अलग फलित हुआ है। सबसे बड़े श्री अजीत कुमार राय को विरासत-स्वरूप दुलार-प्यार और सुविधाएँ तथा द्वितीय डॉ. रंजीत कुमार राय को दूरदर्शिता और वैज्ञानिक बोध, तृतीय स्व. अशोक कुमार राय को सहृदयता और सामाजिकता एवं राजनीतिक अभिरुचि तथा सबसे छोटे सतीश जी को, विद्या-वैभव, तेज, दर्प, मान-सम्मान, रुचि-संपन्नता, सौंदर्य एवं साहित्य-बोध तथा वैज्ञानिक उन्नत जीवन-शैली प्राप्त हुई है। छोटा भाई होने का दुलार सतीश जी ने पाया है तो दर्द भी भोगा है। यह दर्द संघर्ष की परिणति के

रूप में सिद्ध हुआ है। संघर्ष-दु:ख जीवन को मँजने-माँजने का अवसर अदा करता है। पिता द्वारा साधन के अभाव वाले अनुप्रयोग ने सतीश को संघर्षशील, सक्रिय, परिकल्पक और स्वाभिमानी बनाया है। आकाश हो सकने की अदम्य आकांक्षा और तद्नुरूप अथक-विवेकपूर्ण प्रयत्न सतीश जी के शिखर तक पहुँचने का रहस्य है। पिता के स्वाभिमान, स्वविवेक और स्वावलंबन वाले सिद्धांत को सतीश जी ने ठीक से आत्मसात् किया है। सतीश जी के प्रखर प्रयत्न और उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने की आकुलता में मनोवैज्ञानिक रूप से पिता और परिवार की आकांक्षा मूर्तिमान हुई है।

सतीश जी की प्राथमिक-माध्यमिक शिक्षा क्रिश्चन मिशनरी के बेतिया अवस्थित के.आर. हाई स्कूल से हुई है। इसका लाभ विषयगत ज्ञान के अलावा यह हुआ कि सतीश जी का व्यक्तित्व द्वंद्व रहित सदैव निर्णयात्मक बनता गया है। कठिन और जटिल परिस्थितियाँ भी उन्हें कुंठित या द्वंद्वग्रस्त नहीं करती हैं। बेतिया के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कॉलेज एम.जे.के. कॉलेज से इन्होंने इंटर और स्नातक (हिंदी प्रतिष्ठा) की डिग्री प्राप्त की। स्नातक में सतीश जी का परीक्षाफल प्रतिमान रहा। सत्र 1980-82 में स्नातक करने के बाद उनका एम.ए. में नामांकन बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में हुआ। मैं भी उसी सत्र में नामांकित हुआ था। अर्थात् हम लोग सहपाठी हुए।

स्नातक स्तर पर जिन्हें अपना गुरु उन्होंने माना, उनका नाम प्रो. बलराम मिश्र था। उनका व्यक्तित्व अध्ययन में तपस्वी का, आचार-व्यवहार में ऋषि का और अध्यापक के रूप में उपदेशक का था। उन्हें साहित्य और शास्त्र दोनों पर समान अधिकार था। वे शांत सौम्य प्रकृति के प्रगाढ़ पांडित्य प्राप्त अद्वितीय व्यक्तित्व थे। उनकी सतेज दृष्टि ने अपने शिष्य सतीश जी की मेधाशक्ति और ऊर्ध्वमुखी व्यक्तित्व को पहचान लिया था। उन्होंने अपने इस शिष्य को ज्ञान-महिमा से मंडित तो किया ही, स्नेह से अभिसिंचित भी किया। इस शिष्य में जो क्रांतिधर्मी चिंगारी थी, जे.पी. के संपूर्ण क्रांति आंदोलन के समय से प्रज्वलित होने की चेष्टा में थी–उन्होंने उसे साहित्य की ओर बड़ी सतर्कता और समझदारी से मोड़ दिया। दूसरा अवदान डॉ. मिश्र का सतीश जी के जीवन में रहा–भाषाशास्त्रीय अनुशासन का। भाषा की शुद्धता और परिष्कार का अभिज्ञान सतीश जी में खास प्रकार से स्थायित्व पाता है। बुद्ध को आनंद, गुरु को आरुणि, पिता को नचिकेता

जिस भाँति प्रिय थे, सतीश जी भी उसी भाँति अपने गुरु को प्रिय थे। जिस तन्मयता से उन्मत्त-उर्वर बीज को विकसित होने का अवसर गुरु ने शिष्य को प्रदान किया, प्रखर-प्रतापी शिष्य ने भी पूरी कृतज्ञता के साथ उसे पल्लवित-प्रतिष्ठित करने का ईमानदार प्रयत्न किया। इस प्रिय शिष्य की कृतज्ञता अवसरानुसार रचना, प्रकाशन, गोष्ठी, संगोष्ठी, संवाद, विमर्श आदि के परिप्रेक्ष्य में प्रकट होती रही है। यह कृतज्ञताबोध भारतीय संस्कृति की पहचान है, सुगंधि है।

सतीश जी के व्यक्तित्व संवर्द्धन में उनकी पत्नी श्रीमती प्रभा राय की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। वे सतीश जी के जीवन को महमह और मूर्धन्य बनाने में एक संवेदनशील-विवेकशील अर्द्धांगिनी की भूमिका का निर्वाह सतत करती रही हैं। स्नातक करते-करते सतीश जी का विवाह-संस्कार मुजफ्फरपुर के बोचहाँ प्रखंड के सोहिजन गाँव में शंकर प्रसाद सिंह की सुपुत्री प्रभाजी से हुआ। प्रभा के मायके का शहरी आवास मुजफ्फरपुर के चंदवारा मुहल्ले के जे.पी. कॉलोनी में है। प्रभा को संयुक्त परिवार में जीने का अभ्यास था जो सतीश जी के संयुक्त परिवार में सिद्ध हुआ। ससुराल में सबसे छोटी बहू होकर भी सर्वाधिक समझदार और सेवाव्रती बहू का परिचय प्रभाजी ने लगातार दिया है—परिवार के बच्चों की शिक्षा के प्रसंग में। एक माँ और शिक्षिका बनकर अपनी दो सुपुत्रियों—पूजा और समीक्षा—तथा जेठानियों के बच्चों, यहाँ तक कि तीसरी पीढ़ी के लिए भी उनका अवदान, त्याग, सेवा स्मरणीय और उल्लेखनीय है। प्रभा का सांगीतिक व्यक्तित्व बड़ी सुपुत्री पूजा में तथा साहित्यिक व्यक्तित्व समीक्षा में मुखरित हो रहा है। दोनों ने यूजीसी-नेट परीक्षा पास कर ली है। पूजा ने संगीत में शोधोपाधि प्राप्त कर ली है और समीक्षा हिंदी में यह उपाधि प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है। दोनों में भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आभा विद्यमान है। सतीश जी की कला और साहित्य की समृद्धि निश्चित ही पुत्रियों में फलित हो रही है।

भाइयों में अशोक बाबू भावना के स्तर पर सतीश जी के सर्वाधिक निकट रहे हैं, मगर दायित्व-संबंधी निर्वहण में भाई-भाभी, भतीजा-भतीजी, पोता-पोती सभी समान रूप से सतीश जी के खयालों में बसते हैं। मुँहमाँगा भले नहीं हो पाता हो, मगर किसी को निराश तो नहीं ही करते हैं। पारिवारिक संवेदना उनमें जबरदस्त है। हाँ! कौन-किस समय ज्यादा कठिनाई

में है इसका खयाल सतीश जी अवश्य रखते रहे हैं। यह भी स्मरण रखने योग्य है कि अपनी ओर से की जानेवाली सहायता वे विस्मृत नहीं होने देते हैं। उनकी सदाशयता में बौद्धिकता का पुट भी रहता है।

सत्र 1982-84 के कुछ वर्ष बाद तक छात्रावासों में अध्ययनशील स्वाध्यायी लड़के अधिक रहते थे। उस समय छात्रावास संख्या एक में मेधावी और अच्छे रिजल्ट वाले लड़के को ही कमरा आवंटित होता था। हम सतीश जी सब छात्रावास संख्या एक में ही रहकर अध्ययनरत थे। हालाँकि सतीश जी की ससुराल का आवास भी मुजफ्फरपुर में तबसे है, लेकिन वे रहते छात्रावास में ही थे। अध्ययन और अनुशासन के कारण संभव है ऐसा हुआ हो। अपने बैच के नामांकित विद्यार्थियों में सतीश जी सर्वाधिक लंबे, सुडौल, गोरे, नाक-नक्श और रंग में आकर्षक छवि वाले थे। सतीश जी की चाल ऐसी कि शीघ्र ही शहर को माप दें। लंबे घने बाल ऐसे जैसे कोई प्रतिष्ठित अभिनेता हों। वस्त्र-विन्यास भी बहुत खास। तब उन्हें देखकर मुझे ध्रुवस्वामिनी नाटक के चंद्रगुप्त का स्मरण हुआ था–"सीधा तना हुआ, अपने प्रभुत्व की साकार कठोरता, अभ्रभेदी उन्मुक्त शिखर!" उसी के समान संगमरमरी काया-वाला चुंबकीय व्यक्तित्व एवं आर्यन नस्ल। उनकी सौंदर्यपरक दृष्टि सदैव चमक बिखेरती और बोलती हुई। आवाज ऐसी जैसे सदैव सतर्क-सावधान व्यक्ति अभ्यासवश बोलता है। अनुतान, बलाघात और प्राणत्व से अभिसिक्त उनकी वाणी सहज ही आकर्षित करती रही है। तेजस्विता तो उनमें जन्मजात है ही। यह सब मिलकर एक ऐसा आभामंडल खड़ा करता है कि एक-दो बार मिलने या सुनने वाला भी उन्हें याद रखता है। अपनी सुंदर-स्वस्थ छवि को बरकरार रखने के लिए वे सदैव सावधान भी रहते हैं।

सतीश जी के अधिसंख्य सहपाठी उनकी उपस्थिति से प्रसन्न रहते थे। उस समय का हिंदी विभाग शिक्षक और विद्यार्थी–दोनों दृष्टियों से समृद्ध था। विभाग में 12-13 शिक्षक थे। उनमें अच्छे शिक्षक बनने की अघोषित प्रतिस्पर्धा रहती थी। उस समय शिक्षक बिना अध्ययन किए अध्यापन नहीं करते थे। उनमें प्रोफेसर, रीडर और लेक्चरर–तीनों स्तर के शिक्षक सेवारत थे। प्रो. (डॉ.) श्यामनंदन किशोर विभागाध्यक्ष थे। वे कुलपति भी रह चुके थे। वे अच्छे कवि, गीतकार, लोकप्रिय शिक्षक और प्रभावशाली प्रशासक थे। उन्हें पद्मश्री पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। वे भी

वर्गाध्यापन में खूब दिलचस्पी लेते थे। उनके द्वारा 'साकेत' और 'एकलव्य' महाकाव्य का अध्यापन अत्यंत बोधगम्य हुआ करता था। लेकिन किशोर जी सत्रांत तक सदेह नहीं रह पाए। रुग्णता के कारण सेवाकाल में ही उनका देहावसान हो गया। सतीश जी को किशोर जी का आशीष प्राप्त था। किशोर जी के बाद कुछ समय के लिए डॉ. सुरेंद्र मोहन प्रसाद विभागाध्यक्ष हुए। वे भाषाविज्ञान और नाटक साधिकार पढ़ाते थे। उनकी सुपुत्री शैलजा रोला हम लोगों के साथ पढ़ती थी। सतीश जी के बहिर्मुखी व्यक्तित्व से वे काफी प्रभावित थे। मोहन जी के बाद किशोर जी की पत्नी प्रो. (डॉ.) आशा किशोर अपने सेवाकाल के अंत तक अध्यक्ष रहीं। आशा जी सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए दीदी अथवा माँ के समान थीं। बहुत मधुर, शांत, सौम्य स्वभाव की थीं। उनमें अद्‌भुत अभियोजन क्षमता था। विभाग के सर्वाधिक प्रभावशाली और अनुशासनप्रिय व्यक्ति और सफल शिक्षक थे– डॉ. कामेश्वर शर्मा। शर्मा जी 'कामायनी' और 'हिंदी साहित्य का इतिहास' पढ़ाते थे। अद्वितीय अध्यापन कौशल! उनके संबंध में डॉ. बलदेव वंशी द्वारा पूछे जाने पर उनके एक प्रिय शिष्य ने कभी उन्हें पत्र द्वारा बताया था– "जिनका चरित्र कुछ-कुछ कर्ण के समान है। देखने में अमावस और हँसते हैं तो हरसिंगार झरता है।" शर्मा जी सर्वोत्तम शिक्षक तो थे ही, जानदार आलोचक भी थे। 'दिग्भ्रमित राष्ट्रकवि', 'बोध और व्याख्या' के कारण उनकी ख्याति रही है। वे सतीश जी को चाहते थे। शर्मा जी अपने आवास पर शायद ही किसी से मिलते रहे हों, मगर सतीश जी की सक्षमता और मुखरता के कारण उन्हें अपने करीब यदा-कदा आने देते थे। प्रो. महेंद्र मधुकर, प्रो. अवधेश्वर अरुण और प्रो. प्रमोद कुमार सिंह–विभाग में तीन ऐसे शिक्षक थे, जो सहपाठी भी थे और सहकर्मी भी। तीनों लोकप्रिय और सफलतम विद्वान शिक्षक थे। तीनों की अलग-अलग विशेषताएँ थीं। मधुकर जी सुरुचि संपन्न, सुंदर सज-धज वाले सर्तक और सर्वाधिक परीक्षोपयोगी शिक्षक थे। अवधेश्वर अरुण विद्यार्थियों की कठिनाइयों का सहजता से समाधान करने वाले शिक्षक थे। भाषाविज्ञान और काव्यशास्त्र का अध्यापन भी बड़ी रोचकता से करते थे। प्रमोद बाबू वाग्मिता के धनी, सूचनाओं के प्रामाणिक स्रोत, अंतर-ज्ञानानुशासनों से संपन्न अपने अध्यापन कौशल को बेहद प्रभावशाली बनाने वाले विरले शिक्षक थे। बहुविध भाषा-बोध के कारण विद्यार्थी उनके वर्ग को देर तक करना भी पसंद करते थे। सतीश जी

अपने इन तीनों शिक्षकों के समन्वित संस्करण हैं। तीनों का स्नेहाशीष आज भी उन्हें प्राप्त है। अपने गुरुओं के प्रति विभागाध्यक्ष सतीश जी में आज भी वही सम्मान का भाव है। डॉ. रमेश किरण परिश्रमी शिक्षक थे। वे पंत और कबीर का अध्यापन करते थे। विभागीय आर्थिक प्रसंग उनके जिम्मे था। सतीश जी का भी यह पक्ष काफी प्रबल है। विमलेश जी शुक्ल शैली के अध्यापक थे। वे रोचकता से अधिक तथ्यात्मक थे। भगवान लाल सहनी गोदान और भारतीय काव्यशास्त्र का अध्यापन करते थे। गणेश बाबू कहानी और बिहारी का काव्य अत्यंत मनोयोग से पढ़ाते थे। उनकी भाषा सहज बोधगम्य थी। रेवतीरमण उस समय सबसे नए शिक्षक थे और अपने गुरुओं के बीच अध्यापन कर रहे थे। इसलिए उनका अध्यापन अध्ययनपरक अधिक हुआ करता था। बाद में वे अपने समय के अत्यंत योग्य शिक्षक एवं मान्य आलोचक सिद्ध हुए। उनके जितना पढ़ने-लिखने वाला शिक्षक जल्दी नहीं मिलता है। हालाँकि ईश्वर को भी इतने अच्छे मनुष्य की जरूरत आ पड़ी और वर्ष 2021 के कोरोना काल की दूसरी लहर में वे देखते-देखते इस संसार को विदा कह गए। उन्होंने अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में सतीश जी को सर्वाधिक झेला है, यानी चाहा है। रेवती बाबू का इस तरह सहसा जाना हिंदी साहित्य-संसार की अप्रिय और अपूर्ण क्षति है। मुझे भी उनसे पढ़ने, सीखने और साथ पढ़ाने का अनुभव प्राप्त है। उन्हें सतीश जी ने कितना चाहा है, यह इससे सिद्ध होता है कि उनकी सेवा-निवृत्ति के दिन भव्य समारोह के माध्यम से उन्हें पेंशन-पुस्तिका प्राप्त हो गई। यह केवल सतीश जी के प्रताप, परिश्रम और गुरु के प्रति समर्पण के कारण हुआ। प्रमोद जी की अध्यक्षता के बाद सतीश जी विभाग के केंद्र में क्रमशः प्रतिष्ठित होते गए हैं। यह उनकी योग्यता, क्षमता और गुरुजनों के स्नेह तथा भरोसे का प्रमाण है। गणेश बाबू की अध्यक्षता तक विभाग के संचालन में सतीश जी की केंद्रीय और प्रमुख भूमिका थी। बीच में वे कुछ वर्षों तक विश्वविद्यालय के कई महत्त्वपूर्ण प्रशासकीय दायित्व के पदों पर सेवारत रहे, यथा–कुलानुशासक, अध्यक्ष छात्र कल्याण, परीक्षा-नियंत्रक आदि। इस अवधि में विश्वविद्यालय और विभागों का नैक मूल्यांकन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इसमें सतीश जी और विभागीय सहकर्मी एवं शिष्य डॉ. कल्याण कुमार झा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। विश्वविद्यालय को ग्रेड भी प्राप्त हुआ। रेवती बाबू के बाद और सतीश जी के अध्यक्ष बनने के बीच

10 माह का समय उपलब्धि भरा तो रहा लेकिन सामंजस्यपूर्ण नहीं था। लेकिन अंत भला तो सब भला। सतीश जी ने खुशनुमा माहौल में उत्सवपूर्ण समारोह के साथ 1 फरवरी, 2020 को विभागाध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। तबसे अब तक उन्होंने विभाग को विश्वविद्यालय स्तर पर सर्वोत्तम सिद्ध करने के लिए निरंतर कार्य किया है। कोरोना काल में निर्देशानुसार ऑनलाइन वर्ग-संचालन करना हो, वेबिनार हो, अनेक साहित्यकारों की जयंतियाँ हों, प्रसिद्ध कवियों को आमंत्रित कर उनकी काव्य-गोष्ठी का आयोजन हो, अच्छे साहित्यकारों की प्रकाशित पुस्तकों का विधिवत् लोकार्पण हो, दिनकर जयंती के अवसर पर दिनकर की आदमकद प्रतिमा की स्थापना और दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हो, सांसद कोटे से परिसर में बने नए भवन में पुस्तकालय और वाचनालय की नवीन व्यवस्था हो, कक्षों का नामकरण विभाग के पूर्व मूर्धन्य शिक्षकों के नाम पर करना हो, समरसेबुल बोरिंग हो, 'शोध-मनीषा' जैसी शोध-समीक्षा की (रेफर्ड जर्नल) पत्रिका हो, 'नया प्रस्थान' जैसी रचनात्मक पत्रिका का प्रकाशन हो, पूर्व विभागाध्यक्ष पद्मश्री प्रो. (डॉ.) श्यामनंदन किशोर की प्रतिमा की स्थापना एवं संगोष्ठी की योजना हो–इस सारी बेमिसाल और यादगार क्रियान्वितियों में सतीश जी की दूरदर्शिता, परिकल्पना, संकल्प-शक्ति, पराक्रम, समर्पण तथा सीमित समय में बहुत कुछ करने की उद्यमशीलता के दर्शन होते हैं। ये समस्त कार्य आर्थिक पक्ष से भी संबद्ध हैं। इन कार्यों में विश्वविद्यालय की तरफ से कोई आर्थिक सहयोग नहीं है, लेकिन दिनकर ने अदम्य साहस और जीवनी-शक्ति को लक्ष्य कर कहा था–"खम ठोक ठेलता है जब नर,/ पर्वत के जाते पाँव उखड़।" मानो इसी जज्बे और जुनून को अपना आदर्श मानकर उन्होंने अपनी श्रम-साधना, जीवनी-शक्ति और अपराजेय मनोबल से प्रत्येक कार्य में उल्लेखनीय सफलता अर्जित की है। विभागीय और साहित्यिक दायित्वों का संपादन सतीश जी एक निर्द्वंद्व महानायक के अभियान के समान करते रहे हैं।

सतीश जी का अध्यापकीय जीवन 1990 से प्रारंभ हुआ था। 1989 में 'एकांकीकार भुवनेश्वर का यथार्थबोध' शीर्षक शोध-विषय पर गुरुवर प्रो. (डॉ.) प्रमोद कुमार सिंह के शोध-निर्देशन में ससमय वे पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके थे। उनकी नियुक्ति बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग की विज्ञप्ति, अंतर्वीक्षा और अनुशंसा के द्वारा मगध विश्वविद्यालय,

बोधगया के किसान कॉलेज, सोहसराय (बिहार शरीफ) में हुई थी। 1993 में कुलाधिपति के आदेशानुसार अंतरविश्वविद्यालयी स्थानांतरण कराकर सतीश जी बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर आ गए। उनका पदस्थापन विश्वविद्यालय हिंदी विभाग में ही हुआ। हालाँकि उस समय अंतरविश्वविद्यालयी स्थानांतरण चुनौतीपूर्ण था। लेकिन फिर वही सत्य कि सफलता के लिए पूरे मन से किया गया कार्य अवश्य सफल होता है। विभाग में सतीश जी के नौ शिक्षक भी तब कार्यरत थे। गुरुजनों के साथ शिक्षण कार्य कुछ ज्यादा ही परिश्रमपूर्ण था। उस समय विभाग का माहौल वरीयता और अध्यक्षता को लेकर सौहार्दपूर्ण नहीं था, बल्कि थोड़ा असामान्य था। इसका दबाव और तनाव सतीश जी को भी झेलना पड़ा था। इस असामान्यता का एक कारण और विकसित हुआ। वह था–विभाग में हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार में पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम का संचालन। वातावरण जरूर शुरू में संघर्षमय था, लेकिन कालक्रम से सतीश जी जब पाठ्यक्रम समन्वयक बनाए गए तब हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार पाठ्यक्रम में निर्धारित सीटें पूर्णत: नामांकित विद्यार्थियों से भर जाती थीं। इस पाठ्यक्रम का संचालन स्व-वित्तपोषी है। सतीश जी के प्रयत्नों से यह पाठ्यक्रम उत्तरोत्तर विकसित हुआ। सतीश जी पत्रकारिता को अपने कैरियर का संभाग समझकर कार्यरत हुए। सफलता भी मिली, सराहना भी खूब हुई। यहाँ तक कि उन्होंने 'पत्रकार प्रेमचंद' विषय पर डी.लिट्. जैसी महत् उपाधि के लिए शोधकार्य किया। अध्यापन में विशेषज्ञता अर्जित की। अपने अनेक शिष्यों को उन्होंने पत्रकारिता-संबंधी विषयों पर शोध करने के लिए प्रेरित किया और बाद में उनके शोधकार्यों का निर्देशन किया। मीडिया उनके लिए एक मिशन बनता गया। पत्रकारिता पर उनकी दो पुस्तकें शीघ्र प्रकाशित होने वाली हैं। अन्वेषक, शार्ङ्, शोध-निकष, शोध-प्रतिमान, किताब, शोध-मनीषा, नया प्रस्थान आदि पत्रिकाओं का संपादन-प्रकाशन उनकी प्रखर पत्रकारिता की ही देन है। इनमें सभी पत्रिकाएँ हैं तो साहित्यिक, मगर कुछ रचनात्मक हैं और कुछ शोध-समीक्षा से संबंधित। सतीश जी को प्रकाशन, मुद्रण, प्रूफ रीडिंग, कवर डिजाइनिंग, कागज, फर्मा, बाइंडिंग, लेमिनेशन, प्रचार-प्रसार, उसकी व्यावसायिकता आदि का इतना सूक्ष्म और व्यावहारिक ज्ञान है कि बड़ा से बड़ा प्रकाशक भी उनसे वार्ता करने में सजग रहता है।

सतीश जी में केवल प्रकाशन की समझ ही नहीं, पुस्तक खरीदने

की दुर्निवार ललक भी है। पुस्तकों को परखकर रियायती दर पर उन्हें खरीदने की कला उनसे सीखने योग्य है। विश्वविद्यालय परिसर के आवास का प्रत्येक कमरा और बेतिया के पैतृक आवास के कई कमरे पुस्तकों से भरे हैं। अब तक उनके पास 27000 पुस्तकें हैं। उन्होंने अपनी लाइब्रेरी को उन्नत और बेहतर बनाकर रखा है। पुस्तक खरीदना एक बात है और उसका अध्ययन करना, उसे सहेजना अलग बात। सतीश जी दोनों ही दृष्टियों से अनुकरणीय हैं। उनका पुस्तक-प्रेम इतना प्रगाढ़ है कि अपनी पुस्तक जल्दी दूसरे को देखने के लिए भी देने से परहेज करते हैं। हम-आप भी अपनी प्रिय वस्तुओं को सतर्कता से सँजोकर रखना चाहते हैं। सतीश जी का पुस्तकीय ज्ञान और अनुभव-संसार दोनों समृद्ध है। प्रत्येक प्रसंग और समय को अनुकूल कर उपयोगी बनाना अब उनका अभ्यास बन चुका है। सतीश जी के पुस्तकालय को देखकर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का स्मरण हो आता है। कोई भी कोश–शब्दकोश, साहित्य कोश, साहित्यकारों से संबंधित कोश, भाषाविज्ञान कोश, काव्यशास्त्र कोश–सब उनकी लाइब्रेरी में मिल जाएँगे। इसी प्रकार कोई भी रचनावली और ग्रंथावली, आधुनिक साहित्यकारों की समस्त प्रकाशित रचनाएँ–चाहे उनकी विधा कोई भी हो–उनके पुस्तकालय में अवश्व मिल जाएँगे। हिंदी साहित्य के इतिहास की अब तक प्रकाशित अधिसंख्य पुस्तकें उनके पास हैं। प्रकाशन और पुस्तक से संबंधित अद्यतन सूचनाएँ उनके पास सहज रूप में उपलब्ध होती हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के उपग्रह आधारित संचार क्रांति के काल में पुस्तक-प्रेम का ऐसा उदाहरण बहुत कम मिलेगा।

पुस्तकालय-समृद्धि का एक कारण तो उनका पुस्तक-प्रेम है और दूसरा उनका शोध के प्रति आकर्षण और समर्पण। स्वयं पीएच.डी. और डी.लिट् की उपाधि के लिए शोधकार्य करने के बाद अब तक वे पाँच दर्जन से अधिक शोधार्थियों का सफल शोधनिर्देशन प्रत्यक्षत: और चार दर्जन से अधिक शोधार्थियों का अप्रत्यक्षत: कर चुके हैं। यह क्षमता समग्र हिंदी संसार में कम ही अध्यापकों में परिलक्षित होती है। उनके दर्जनों शोध-पत्र और आलेख मानक पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। यू.जी.सी. परिनियम-2009 के आधार पर शोधकार्य करने की जब शुरुआत हुई, सतीश जी विश्वविद्यालय द्वारा तबसे ही समन्वयक बनाए गए हैं। इसके अंतर्गत शोध-पाठ्यकार्य, मतबंध पर आधारित परिनियमानुसार शोधार्थियों का मूल्यांकन एवं शोध-पंजीयन

हेतु अनुशंसा आदि गुह्य और गंभीर कार्य का सहज संपादन सिर्फ सतीश जी के वश की बात है। इनके साथ संबद्ध शोधार्थी को ठीक से शोधकार्य करना पड़ता है, क्योंकि शोध-अनुशासनों का इन्हें सम्यक् ज्ञान है। शोधकार्य के लिए इनकी शर्त है–अछूता और महत्त्वपूर्ण विषय, जिस पर अब तक कार्य नहीं हुआ हो। इनकी प्रखर प्रतिभा, तीव्र मेधाशक्ति, अगाध अध्ययन और सक्षम शोधदृष्टि का परिणाम है कि इनके साथ संबद्ध होकर इतने विद्यार्थियों ने उपाधि प्राप्त की है। इस संदर्भ में दूसरी विलक्षण बात यह है कि इन्होंने अपनी विशेषज्ञता वाले विषयों–नाटक और पत्रकारिता (स्नातक में विशेष पत्र–नाटककार प्रसाद और स्नातकोत्तर में हिंदी नाट्य और रंगमंच तथा डी.लिट्. में पत्रकार प्रेमचंद)–के अलावा साहित्य की लगभग सभी विधाओं और उन विधाओं के रचनाकारों पर केंद्रित शोध-परियोजनाओं में उसी विशेषज्ञता के साथ शोध-निर्देशन किया है। इनकी विशेषज्ञता में कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, आलोचना, संस्मरण सब सम्मिलित हैं। वैचारिक दृष्टि से भी हिंदी साहित्य का लगभग हर क्षेत्र इनके शोध-निर्देशन का साक्ष्य देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि विश्वविद्यालय में शिक्षक बनने के बाद सतीश जी एक मुकम्मल तैयारी के साथ इस क्षेत्र में दत्तचित्त हुए। इनकी शोधदृष्टि उल्लेखनीय और प्रेरक है। इनकी स्मरण-शक्ति और स्वच्छ समझ के कारण इन्हें यह मुकाम हासिल हुआ है। इनकी शोधदृष्टि और इनके शोधकार्यों पर अलग से विचार करना अपेक्षित है। शोध के क्षेत्र में प्रमोद बाबू के सही उत्तराधिकारी सतीश जी ही हैं। साहित्य-संसार में इनकी आचार्यवत् पहचान इनकी शोधदृष्टि और शोधकार्यों को लेकर कायम हुई है। निस्संदेह, सतीश जी के यश-विस्तार में उनकी शोधदृष्टि, उनके शोधकार्यों, शोध-निर्देशनों एवं शोधपरक पत्रिकाओं के प्रकाशनों का योगदान रहा है। उन्होंने दर्जनों पुस्तकों का संपादन भी किया है, जो साहित्य की उपलब्धि है।

सतीश जी प्रत्युत्पन्नमतित्वशाली शिक्षक हैं। साहित्यानुरागी हैं। उन्होंने साहित्य को अपनी तरह से साधा है। बौद्धिकता उनकी बरकत है, वाग्मिता उनकी प्रकृति, इसलिए किसी भी मंच पर आप बाजी मारने में सफल होते हैं। पचास से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, उन्मुखीकरण, पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में आपकी भूमिका संसाधन-पुरुष या समन्वयक या आयोजन-सचिव या निर्देशक की रही है। सतीश जी रचनात्मक व्यक्ति हैं–

काव्य-संवेदना की तरलता से सदैव भरे हुए। इसलिए कवि-गोष्ठी हो, संगोष्ठी हो, चर्चा-परिचर्चा हो–इन सबके संचालन में वे आत्मिक रुचि लेते रहे हैं और इस क्षेत्र में अपनी बेमिसाल और काबिले-तारीफ दक्षता प्रदर्शित करते रहे हैं। भारतवर्ष के अनेक महत्त्वपूर्ण विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों के आयोजनों में जब आप आमंत्रित किए जाते हैं तब वे कार्यक्रम आपकी उपस्थिति-संबोधन-उद्‌बोधन से समृद्धि पाते हैं। हालाँकि विभागीय और अध्यापन आदि कार्याधिक्य के कारण अनेक आमंत्रणों को आप 'फिर कभी' के नाम पर अस्वीकार भी करते हैं।

सतीश जी की सबसे बड़ी विशेषता समयानुशासन है। समय के अनुपालन में वे निष्ठावान व्यक्ति हैं। लोकप्रिय और सफल शिक्षक या बेहतर नागरिक बनने के मूल में उनकी समय की पाबंदी है। सही शिक्षक की पहचान ससमय वर्ग में उपस्थित होना और पाठ्यक्रम आधारित छात्रोपयोगी अध्यापन करना है। सतीश जी अपनी निजी, पारिवारिक-सामाजिक जरूरतों को कई बार वर्गाध्यापन के कारण नकारते पाए गए हैं। कभी-कभी तो पारिवारिक हादसों के प्रसंग में मैंने ऐसा देखा है। विद्यार्थियों को जागृत कर चैतन्य बनाने का अद्‌भुत हुनर उनमें है। आप अचानक किसी भी विषय पर उनसे भाषण करा सकते हैं। आप निराश नहीं होंगे। उन्हें इसके लिए अलग से तैयारी नहीं करनी पड़ती है।

सतीश जी को अच्छा पहनने, खाने, खिलाने, कमाने, पढ़ने-पढ़ाने, समझाने, प्रबंधन करने, बाजार की खबर रखने, आर्थिक पक्ष को मजबूत रखने का शौक और इल्म दोनों है। यह उनकी प्रकृति और कर्मठता तथा सार्थक प्रयत्न के कारण सिद्ध हो पाता है। आय-व्यय के संतुलन का अद्‌भुत मैकेनिज्म उन्हें आता है। क्रीड़ा में उन्हें क्रिकेट में दिलचस्पी है। उनकी मातृभाषा भोजपुरी है, इसलिए भोजपुरी संगीत तथा साहित्य के तार भी उनके अंदर बजते रहते हैं। सतीश जी स्लो लिखते हैं मगर अत्यंत शुद्ध और परिमार्जित लिखते हैं। लिखने से अधिक डिक्टेशन देना उन्हें पसंद है। लेकिन हर हाल में उनका लेखन सार्थक और प्रभावशाली है।

सतीश जी बहुआयामी प्रकृति के बहुश्रुत व्यक्ति हैं। एक आलेख में उनके संबंध में बारीकी से सबकुछ कहना असंभव है। उनका लेखन-संसार भी समृद्ध है। उन पर अलग से गंभीर लेखन और संवाद की प्रतीक्षा रहेगी। प्रत्येक व्यक्ति की जीवन-यात्रा अपूर्णता से पूर्णता की जीवन-यात्रा है। यानी

हर व्यक्ति की सीमाएँ हैं, जिनका परिहार संवेदनशील और बौद्धिक व्यक्ति ही करता है। सतीश जी में भी परिहार के योग्य क्या बचा है?–इन विषयों पर फिर कभी अवसर मिलने पर चर्चा होगी, जैसे–'हर हवा हमें छूकर बहे'। लेकिन राधाकृष्ण शिक्षा सम्मान, साहित्य-सेवा-सम्मान, सृजन-सम्मान, संचेतन सम्मान, पत्रकारिता प्रशस्ति पत्र, नेपाली सम्मान, चंपारन रत्न सम्मान, लक्ष्मीनारायण सिंह सुधांशु सम्मान जैसे दर्जनों सम्मान इनकी प्रतिभा-योग्यता का प्रमाण देते हैं।

सारांशत: सतीश जी के व्यक्तित्व-कृतित्व को समग्रता में समेटकर देखने पर प्रतीत होता है कि भारतीय काव्यशास्त्र के तीन सिद्धांत उनके प्रसंग में घटित होते हैं–काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन और काव्य-रीति। काव्य-हेतु के प्रमुख चारों अवयव–प्रतिभा, व्युत्पत्ति, परंपरा और अभ्यास–सतीश जी के व्यक्तित्व में समाहित हैं। प्रतिभा तो उन्हें प्रकृति से पुरस्कार में प्राप्त है। शास्त्रबोध उन्हें गुरुओं से प्राप्त हुआ है, इसलिए उनकी भाषा अनुकरणीय और व्याकरणसम्मत है। साहित्य की पुष्ट परंपरा को उन्होंने अपने अबाध अध्यवसाय से आत्मसात् किया है। अभ्यास तो आचार्य का धर्म और कर्म है।

आचार्य मम्मट ने काव्य के छह प्रयोजन बताए हैं। सतीश जी ने उन्हें अपने रचनात्मक जीवन में सिद्ध किया है। यश-आकांक्षी शिक्षक और रचनाकार दोनों होते हैं। सतीश जी में यह गुणात्मक रूप में समाहित है। उनकी प्रत्येक सक्रियता से किसी-न-किसी क्षेत्र में 'मील स्तंभ' कायम होता है। उनके अंदर सदैव एक अर्थशास्त्री और गणितज्ञ क्रियाशील रहता है, जो उन्हें पराभूत और पस्त नहीं होने देता। उनकी उपलब्धियों में ज्ञान के साथ-साथ भुगतान संतुलन और अर्थोपलब्धि भी है। इसका श्रेय उनके वैज्ञानिक रीति वाले सार्थक प्रयत्न को जाता है। सतीश जी में राग-तत्त्व भरपूर है। तरल संवेदना वाले मधुर व्यवहार और अच्छी अभियोजन क्षमता के कारण उनके सरोकार का फैलाव विस्तृत और महत् कार्यों की सिद्धि का रहस्य भी उसमें समाहित है। सभ्य-शालीन-सौम्य व्यवहार इनकी प्रकृति है और अन्यथा प्रतीत होने वाला व्यवहार नाटकीय। सतीश जी में सदाशयता शिवेतरक्षतये के भाव वाला है। माँगने वाला कोई उनसे सर्वथा निराश कभी नहीं होता है। इनके इस गुण से अनेक शिष्य अभिसिंचित होकर लहलहा रहे हैं। परेशानी का पैगाम और दु:ख का दरख्वास्त भी उनके समीप

आते-आते दर्द का दस्तावेज बनने से रह जाता है। कठिन और प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी उन्हें विचलित नहीं करतीं। बड़े दु:खों से शीघ्र ही निजात पाने का साहसी ज्ञान उनमें मौजूद है। वे उर्दू साहित्य के अनुरागी हैं। इसलिए उनके उद्‌बोधन, व्याख्यान आदि शेरो-शायरी से ओत-प्रोत तथा अति मधुर होते हैं, सम्मोहन पैदा करते हैं, साथ ही रचनात्मक जीवन की सिद्धि का सूत्र भी देते हैं। 'अनजान' से 'आचार्य' और 'अध्यक्ष' की यात्रा निश्चित ही स्मरणीय है।

–प्रोफेसर, विश्वविद्यालय हिंदी विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।
संप्रति–प्रधानाचार्य, राम सकल सिंह विज्ञान महाविद्यालय,
सीतामढ़ी।